International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2016; Page No. 88-90

प्रेमचंद का हिन्दी कथा–साहित्य

डॉ. कामना कौशिक
विभाग अध्यक्ष, सी. एम. के. नेशनल पी. जी. कॉलेज, सिरसा, हरियाणा, भारत।

1. प्रस्तावना

प्रेमचन्दजी हिन्दी कथा साहित्य में मेरुदण्ड के समान है। वे जितने साहित्यकार के रूप में महान थे उतने ही वे मनुष्य के रूप में भी महान थे। उनका व्यक्तित्व का और कृतित्व एक युगान्तरकारी घटना है। विद्वानों का मानना है कि प्रेमचन्द के सच्चे उत्तराधिकारी के रूप में प्रेमचन्द ही माने जा सकते हैं। दोनों ने निर्धनता में दिन काटे है। परन्तु प्रेमचन्द सूझ–बूझ से अपनी निर्धनता को दूर कर सके, जबकि प्रेमचन्द की परिस्थिति में जीवन के अंत तक को परिवर्तन नहीं आया। अपने प्राणों को निचोड़कर वे लिखते गये। उनके हृदय में अश्रु छिपे थे। उन्होंने किसान जाति के प्रतिनिधि के रूप में मानव माञ के वेदना को व्यक्त किया है।

प्रेमचन्द का उपन्यास साहित्य इस प्रकार है, 'सेवा सदन, वरदान, रंगभूमि, प्रतिज्ञा, कायाकल्प, कर्मभूमि, निर्मला, गबन, गोदान और मंगलसूञ अपूर्ण तथा कहानी–संग्रहों में सप्तसरोज, प्रेम पूर्णिमा, प्रेम पचीसी, प्रेम प्रसून, प्रेम द्वादशी, प्रेम प्रतिभा, प्रेम तीर्थ, प्रेम प्रमोद, प्रेम चतुर्थी, प्रेरणा, समर याञा, पंचप्रसुन, प्रेम प्रतीक्षा, सप्त सुमन, नवजीवन आदि है। उनकी समस्त कहानियां मानसरोवर आठ खंड में संग्रहित हैं।

प्रेमचन्द ने विधवा समस्या का चिञण प्रतिज्ञा, प्रेमाश्रम और वरदान उपन्यास में किया है। सेवा सदन में वेश्या जीवन, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह तथा स्त्री शिक्षा की समस्या चिञित की है। आर्थिक मुसीबत के कारण ही प्रेम की समस्या उपस्थित होती है और आर्थिक संकट के कारण ही मनुष्य के रुप में' हम देखते है कि बाप बेटी को बेचता है ओर ससुर बहु को बेचने के लिए प्रस्तुत हो गया है।

प्रेमचन्द के 'गबन' उपन्यास में भी अनमेल विवाह, वेश्या समस्या तथा विधवा समस्या अंकित है। 'प्रेम श्रम' में राजनीतिक समस्या, हिन्दू–मुस्लिम एकता की समस्या का चिञण है। 'रंग भूमि' में धनी–गरीब, किसान जमींदार, पूंजीपति–मजदूर के बीच संघर्ष की कथा है। उन्होंने हिन्दू–मुस्लिम, सिख, साइ सभी को एक सूञ में बांधने का प्रयास किया है।

कायाकल्प' में हिन्दू–मुस्लिम वेंमनस्य तथा सांप्रदायिक समस्या का निरुपण किया है। 'कर्मभूमि' में हरिजन उद्धार, हिन्दू–मुस्लिम ऐक्य तथा नारी जागरण कि समस्या को उठाया है। 'गोदान' में प्रधान रूप से किसान वर्ग की समस्या चिञित हुई है। प्रेमचन्द के उपन्यासों में राजनीति के साथ सामाजिक समस्याओं का समन्वय देखने को मिलता है। दादा कामरेड, देशद्रोही आदि में मिल मालिक तथा मजदूर का संघर्ष है। इसके साथ साथ प्रेम की समस्या तथा विधवा समस्या का चिञिण है

साम्प्रदायिक समस्या का चिञण 'झूठा सच' में है, विभाजन पूर्व और विभाजन के बाद की स्थिति को लेकर लिखी गई कथा द्वारा तत्कालीन परिरिथति का सजीव चिञण दिया गाया है। 'अप्सरा का शाप' में पुरुष प्रधान समाज पर व्यंग्य किया गाया है। 'बारह घण्टे' में सा विधवा बिनी और विधूर फेंटम का मिलन श्मशान में करवाकर दो समान विरही की अतृप्त भावना की तृप्त करने का मौका दिया गया है। 'क्यों फसे' में सेक्स की समस्या का चिञण है।

'गीता पार्टी कामरेड' में नायिका विद्रोह की कथा चिञित करके गीता के सम्पर्क से भावरिया का हृदय परिवर्तन कैसे हुआ यह चिञित किया गया है। 'दिव्या' में नारी जीवन की समस्या वर्ग भेद के द्वारा खड़ी कर दी है।' अमिता' में निर्दोष, निश्चल बालिका के द्वारा अशोक का हृदय परिवर्तन दिखा कर उन्होंने विश्व शांति का संदेश दिया है। इन दिनों में सब से बड़ा साम्य यही रहा है कि ये दोनों मानवता के पुजारी थे। इन्होंने मिल मालिक ओर मजदूर, किसान ओर जमीनदर, धनी ओर निर्धन, शिक्षित ओर अशिक्षित, बच्चे युवा और वृद्ध, सभी वर्ग के चिञ प्रस्तुत किया है। इतना साम्य होते हुए भी दोनों का कथा शिल्प विषमता भी रखता है।

2. पुरातत्व साहित्य कार्यक्षेत्र

प्रेमचन्द के कथानकों में मजबूरी, दिनता एवं कौतूहल है। गांव की टूटी–फूटी एवं जर्जरित झोपडियों, कुछ गाय बछड़े, भैंसे और इससे अधिक यदि उसके पास समृद्धि है तो दो चार बीघे जमीन, जिसमें वे खेती करते है। बेचारे ग्रामीण एड़ी से चोटी तक का पसीना एक करके मजदूरी करते हैं, परन्तु उनके भाग्य में परपेट भोजन भी कहा है?

दिन दुःखी, असहाय निर्धन, फटेहाल सतत् श्रम के कारण पसीने से तरबतर भोले–भाले ग्रामीण निरन्तर अभावों में जीवन व्यतीत करते हैं, इतना ही नहीं धनिक वर्ग से दबते रहते हैं, पिसते रहते हैं। प्रेमचन्द ने विशेष रूप से भारतीय ग्राम और ग्रामीण जनता की जिंदगी, उनकी रोजमर्रा की समस्या एवं संघर्षों का मार्मिक चिञण किया है।

इसी तरह प्रेमचन्द ने भी वर्ग भेद एवं वर्ण भेद का विरोध किया है। मजदूर और मिल मालिक संघर्षों का चिञण कर शोषण प्रथा दूर करने का प्रयास किया है। समाज में व्याप्त दास प्रथा को समूल मिटा देने की उनकी तीव्र इच्छा थी। नारी जीवन के वे उद्धारक रहे। नारी पति की गुलाम नहीं, परन्तु सहचरी है। उन्होंने समाजिक एवं राजकीय परिस्थिति का यथार्थ चिञण चिञित किया है। जीवन की करुणा, वेदना, व्यथा, पीड़ा एवं बेचेनी प्रेमचन्द के चिंतन की ठोस को लेकर आधार भूमि थी। उन्होंने यथार्थ घटनाओं से ही प्रेरणा पाकर कथा साहित्य की रचना की है।

मनुष्य जो मधुर स्वप्न लोक में विचरण करता है, वह अनेक इच्छा, आकांक्षा एवं महत्वकांक्षा को पूरी करने के लिए करता है। अपनी कल्पना एवं स्वप्न को साकार करने के लिए प्रयत्न करता है परन्तु उसका स्वप्न साकार नहीं होता तब हताशा हो जाता है। ग्रामीण किसान सतत् श्रम करके निर्जीवसा बन जाते है। परिश्रम से जर्जरित, क्षुधा से पीडित अर्ध नग्न, चिंता से ग्रस्त–निराशा से घिरा हुआ जीवन व्यतीत करते हैं।

प्रेमचन्द में मानवीय पक्ष अधिक विकसित हुआ है। ''प्रेमचन्द की अभिव्यक्ति अनुभूति की अभिव्यक्ति है। एक किसान के रुप में उन्होंने दुःख, दर्द को झेला है। उनका अनुभव धनिया के द्वारा इस प्रकार प्रकट हुआ है–'इस घर में आकर उसने क्या नहीं।1

यहां स्पष्ट हो जाता झेला' आज क्यों नींद में सोये हुए हो ?'' है कि प्रेमचन्दजी ने अर्थ–संकट में जीवन व्यापन किया था। अतः यहा

अभिव्यक्ति प्रभावशाली बन गई है। उन्होंने प्रथम बार उपन्यास साहित्य में एक नवीन रूप प्रस्तुत किया है।
इसकी रचनाओं में मनोरंजन क्षीण है परन्तु कृषक तथा श्रमिक जीवन का सजीव चित्र कला कुशलता के साथ अंकित किया है। यहा प्रेमचन्द ने अपने देश का चित्रण द्वारा कथा साहित्य को पुष्ट किया है वहा प्रेमचन्द ने देश और विदेश के चित्रण द्वारा भी कथा साहित्य को पुष्ट किया है। प्रेमचन्द ने जमींदार, मिल–मालिक, पुलिस, पटवारी और राज कर्मचारियों कि वृतियों पर प्रहार किया है। गरीबों की गर्दन पर छुरी चलाने वालों पर तीव्र व्यंग्य किया है। उनकी मनोवेदना होरी के माध्यम से प्रस्तुत हुई है। अर्थाभाव के कारण ही विद्रोह की भावना जागृत होती है। मेहनतकश जनता की स्थिति का यथातथ्य चित्रण किया गया है।

3. अनुसंधान के उद्येश्य

'गोदान' में किसान मजदूर संघर्ष का हृदय–द्रावक किया गया है। धनिक वर्ग गरीबों को चूसते जाते हैं, लूटते जाते हैं। होरी की स्थिति तो देखो, उसकी मृत्यु के समय गाय का दान करने की शक्ति नहीं है। सिर्फ घर में सवा रुपया था, वही उसका गोदान था। इस मार्मिक चित्रण में तीव्र करुणा मिलती है। प्रेमचन्द ने दादा कामरेड, देशद्रोही आदि में मिल–मालिक तथा मजदूर वर्ग का संघर्ष चित्रित किया है परन्तु इसमें राजकीय चित्रण अधिक है।
साहित्यकारों का ध्येय रहा है कि मानव जीवन का उत्थान करना। उसकी प्रगति में बाधक तत्वों को उखाड़कर फेंक देना है। प्रेमचन्द के उपन्यास तो सफल है ही परन्तु कहानी कला के क्षेत्र में भी उपन्यास की तरह सफलता पाई है। विभिन्न सामाजिक समस्याओं को लेकर कहानियां लिखि है। प्रेमचन्द ने साहित्य जगत में प्रवेश कहानी साहित्य द्वारा किया है उनकी कहानियों में विषय की विविधता है। अनेक समस्या को लेकर उन्होंने कहानियों का निर्माण किया है। उनकी कहानियां बडी मार्मिक है। फिर भी उनकी यश–पताका तो उनके उपन्यासों से फहराती है।

4. अनुसंधान विधि

प्रेमचन्द आंतिकारी लेखक थे अतः आंति उनकी मंगल भावन प्रकट हुई है। प्रेमचन्द की मंगल भावना में भावुकता एंव करुण का ही प्राधान्य न होकर वे भी विद्रोही बनकर समाज में व्याप्त अनीति, अत्याचार एवं भ्रष्टाचार का विरोध करते रहे। विश्व के ये दोनों महान कृतिकार समदर्शी, सहानुभूतिशील, उदार एवं मानवधर्मी थे।
प्रेमचन्द ने देहात और नगर के सभी वर्गों के मनुष्यों का चित्र कथा साहित्य में अंकित किया है। उन्होंने व्यावहारिक धरातल पर जीवन की समग्रता को छूआ है। प्रेमचन्द जी ने नारी की स्वाभाविक एवं सूक्ष्मतम भावनाओं का, उसकी शक्ति एवं दुर्बलता का, उसके स्वभाव का, धरेलू जीवन का और चारित्रिक उत्थान पतन का, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है परन्तू प्रेमचन्द ने नूतनता से नारी का चित्रांकन किया है।
उन्होंने निम्नवर्ग की, मध्यवर्ग की और उच्चतर वर्ग की नारियों का चित्रण किया है। बालिका, युवती और प्रौढ़ा सभी को अपने साहित्य में स्थान दिया है। नारी की करुणता, विवशता एवं मजबूरी का चित्रण किया है। जिस प्रकार प्रेमचन्द की धनिया, निर्मला, जालपा, गोविन्दी आदि अमर नारी पात्र है वैसे ही शैल, सोमा, राज, तारा, दिव्या, अमिता, गीता, ऊषा आदि अमर नारी पात्र है। दोनों के नारी चित्रण में वैविध्य है। परन्तु प्रेमचन्द के नारी पात्र पुरुष पात्र की तूलना में अधिक सशत्क एवं तेजस्वी है। कहानी कहने में दोनों कलाकार बेजोड़ है फिर भी अन्तर यही है कि प्रेमचन्द में संवेदनशीलता अधिक है तो प्रेमचन्द की यथार्थ की अभिव्यक्ति में आक्रोश अधिक है।
प्रेमचन्द के हृदय में किसानों एवं मजदूरों के प्रति हमदर्दी थी, मानव की महानता में विश्वास करते थे। पतन की खाई में गिरे हुए मानव का कल्याण करने की भावना थी। गरीबों के प्रति अपार स्नेह था। क्षमिकों का उद्धार करने की तीव्र आंतरिक भावना थी। प्रेमचन्द और प्रेमचन्द दोनों ही यथार्थवादी कलाकार थे। दोनों की विचारधारा और जीवन दृष्टि में समानता थी। प्रेमचन्द ने अपनी निर्भीक कलम से गाँव का चित्रण किया है तो प्रेमचन्द ने निर्भीक लेखनी से समाज के नग्न यथार्थ को प्रस्तुत किया है।
'झूठासच' में बड़े–बड़े ऊपरी अधिकारियों का खोखलापन खुले आम प्रस्तुत किया है। ग्राम–सभ्यता का जीता–जागता प्रतीक किसान है, जो आर्थिक संकट, सामाजिक कुरिवाजों एवं धार्मिक अंध–श्रद्धाओं की चक्की में पिसा जा रहा था। इन सारी परिस्थितियों से प्रेमचन्द का नजदीक का परिचय क्षेत्र का इतना ही नहीं था, परन्तु इन परिस्थितियों से स्वयं गुजरे थे। अतः उनके उपन्यासों में सामाजिकता का फूट है। साथ–साथ स्वाभाविकता, विश्वसनीयता तथा कलात्मकता है। विषय वस्तु की दृष्टि से प्रेमचन्द के उपन्यासों में तत्कालीन, सामाजिक, राजनीतिक तथा ग्रामीण समस्यायें विविध आयामों में निरूपित की गई है।
प्रेमचन्द के उपन्यासों में भी तत्कालीन सामाजिक राजनीतिक स्थिति का चित्रण किया गया है। वेश्यावृति, विधवा–विवाह, असंगत विवाह, किसान–जमींदार, मिल–मालिक मजदूर का संघर्ष एवं समस्यायें चित्रित की गई है। प्रेमचन्द सामान्य व्यक्ति को अपनी रचना का नायक बनाते हैं जबकि प्रेमचन्द सामान्य और असामान्य व्यक्ति को नायक के रुप में चुनते है और यथार्थ का आंकन करते है।
प्रेमचन्दजी गाँधीवाद से अछूते नहीं रहे परन्तु गाँधीवाद की आध्यात्मिकता को उन्होंने स्वीकार नहीं किया। प्रेमचन्द का गांधीवाद को न सम्पूर्ण रूप से त्याग सके न मार्क्सवाद को सम्पूर्ण रूप से अपना सके हैं। प्रेमचन्दजी ने गांधीवादी की कड़ी आलोचना की है और उनकी रचनाओं में मार्क्सवादी दृष्टि बिन्दु ही मुखरित हुआ है। प्रेमचन्दजी गोदान तक आते–आते प्रगतिशील बन गये थे।
प्रेमचन्द के कथा साहित्य में तत्कालीन राजनीतिक तथा सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्र प्रतिबिम्बित हो उठा है। उसमें उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन, और उसके परिणाम पर प्रकाश डाला है। साथ–साथ सकार की नीति एवं शासन व्यवस्था की अनैतिकता की पोल भी खोल दी है। इस प्रकार अनेक सामाजिक समस्याओं का भी सफलता से चित्रण किया है। उनके राजनीतिक विचार प्रगतिशील थे। उनके अंत करण में भारत की पराधीनता की झंजीर से मुक्त करने की भावना थी वे संपूर्ण रूप से स्वराज्य के चाहक थे। वे समाज में व्याप्त शोषण प्रथा को जड़ समेत उखाड़ा फेंकना चाहते थे। समाज में फैली हुई आर्थिक विषमता को दूर कर नये ढंग की समाज व्यवस्था करना चाहते थे। परन्तु प्रेमचन्द चुस्त रूप से यथार्थवादी थे। मार्क्सवाद का उन पर गहरा प्रभाव था।
प्रेमचन्द ने देखा है कि स्त्री और पुरुष में सद्भाव और सहयोग की भावना का अभाव है। इससे समाज–कल्याण की भावना पूरी करना असंभव है। अतः वे स्त्री और पुरुष में संतुलन स्थापित करना चाहते थे। प्रेमचन्द इससे भी एक सोपान आगे बढ़कर नारी की निरीह, असहाय एवं व्यक्ति स्थिति में सुधार करने के लिए स्त्री शिक्षा एवं आर्थिक रूप से नारी को स्वतन्त्र एवं स्वावलम्बी बनाने के पक्ष में थे।
प्रेमचन्द का धर्म सम्बन्धी दृष्टिकोण आंतिकारी था। समाज में व्याप्त धार्मिक मान्यताओं पर प्रहार किया है। धर्म के कारण ही जातिभेद तथा ऊँच–नीच की भावना उपस्थित होती है। दीन–दुखियों की सेवा करके मानव–धर्मी का समर्थन किया है। प्रेमचन्द आध्यात्मिक दृष्टि से नास्तिक थे। उन्होंने धार्मिक आडम्बरों का विरोध किया है। मनुष्य जो मधुर स्वप्न लोक में विचरण करता है, वह अनेक इच्छा, आकांक्षा एवं महत्वकांक्षा को पूरी करने के लिए करता है। अपनी

कल्पना एवं स्वप्न को साकार करने के लिए प्रयत्न करता है परन्तु उसका स्वप्न साकार नहीं होता तब हताशा हो जाता है। ग्रामीण किसान सतत् श्रम करके निर्जीवसा बन जाते है। परिश्रम से जर्जरित, क्षुधा से पीडित अर्ध नग्न, चिंता से ग्रस्त–निराशा से घिरा हुआ जीवन व्यतीत करते हैं।

5. संदर्भ

1. फादर कामिल बुल्के, अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश, पृ. 304।
2. एस पोपोव, मानवतावाद और समाजवाद, पृ. 5।
3. हिन्दी साहित्य कोश, पृ. 369–70।
4. प्रेमचन्द समग्र – सम्पादक डॉ. युगेश्वर, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन वाराणसी, पृ. 85।
5. गबन, पृ. 86।
6. वेणी प्रसाद शर्मा, प्रेमचन्द, पृ. 15।
7. प्रेमचन्द, समग्र, सम्पादक डॉ. युगेश्वर, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन वाराणसी, पृ.125.